

बच्चे के व्यक्तित्व विकास में वृद्धों की भूमिका

सारांश

मानव जीवन विकास सतत् एवं स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में चलता है। शैष्य अवस्था से प्रारम्भ हो यह वृद्धावस्था तक चलने वाली प्रक्रिया है। जीवन का अंतिम पड़ाव वृद्धावस्था अपने में अनेक अनुभवों को समेटे होती है। यह एक ओर अनेक समस्याओं तथा चुनौतियों का काल है तो दूसरी ओर नई पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का समय है। 60 वर्ष के पश्चात् की वह आयु जिसमें व्यक्ति सेवानिवृत्त ही दादा-दादी, नाना-नानी की भूमिका को ग्रहण कर अनेक नये उत्तरदायित्वों के साथ बच्चों को अपना मार्गदर्शन प्रदान कर विकसित कर सकता है।

मुख्य शब्द : वृद्ध, बच्चे, समस्यायें, व्यक्तित्व, विकास, चुनौतियाँ, सामाजिक मूल्य, पालन-पोषण, यूनाइटेडनेशन, डब्ल्यू.एच.ओ.

प्रस्तावना

मानव जीवन में विकास सतत् एवं स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में चलता है। मानव विकास की यह प्रक्रिया माता के गर्भ से प्रारम्भ होकर अनेक अवस्थाओं यथा- शैशव, बाल्य, किशोर, प्रौढ़ एवं वृद्धावस्था को पार करती हुई अन्ततः मानव जीवन चक्र का अन्त करती है। वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव कहा जाता है। इन्हें प्रत्येक देश की संस्कृति के अनुसार अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है।

वृद्धजन (Old people) (ब्रिटिश एवं अमेरिका में प्रयुक्त), वरिष्ठ (Senior) (अमेरिका में), सीनियर सिटीजन (ब्रिटिश एवं अमेरिका में प्रयुक्त), बड़े प्रौढ़ (Older adults) (सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त),

वृद्धावस्था को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनाइटेड नेशन द्वारा 60 वर्ष से ऊपर के व्यक्तियों की अवस्था को परिभाषित किया गया। अफ्रीका में किए गए एक अध्ययन के अनुसार वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन ने माना कि 50 वर्ष की आयु से वृद्धावस्था की शुरुआत हो जाती है। लेकिन डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा यह भी माना गया कि विकासशील देशों में वृद्धावस्था को वर्षों से नहीं बल्कि उनकी नई भूमिकाओं, पहले प्रदान की गई भूमिकाओं में कमी और समाज में सक्रिय योगदान देने में आई कमी से जाना जाता है। जबकि विकसित देशों में 60 से 65 वर्ष की आयु को सेवानिवृत्ति और वृद्धावस्था में सामाजिक कार्यक्रमों के योग्य माना जाता है। सन् 1950-51 में विश्व में जीवन प्रत्याशा 50 वर्ष थी जो 1990 में 60 वर्ष हुई तथा 2001 तक आते-आते 73 वर्ष हो गई। विश्व की सम्पूर्ण जनसंख्या में वृद्धजनों का अनुपात विकसित देशों में 41 प्रतिशत और विकासशील देशों में 59 प्रतिशत होगा। इनकी मासिक वृद्धि दर 15 लाख से भी अधिक है। वृद्ध जनसंख्या में तेजी से वृद्धि एक ऐसी सामाजिक घटना है जो मानव समाज में पहली बार दृष्टिगोचर हो रही है यह अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 2040 तक अधिकांश देशों में वृद्ध जनों की एक बाढ़ सी आई होगी परन्तु उनकी देखभाल, सेवा-सुश्रुषा के लिये युवा पीढ़ी की भारी कमी

पूनम बजाज

व्याख्याता,

समाजशास्त्र विभाग,

चौ0 बल्लूराम गोदारा राजकीय

कन्या महाविद्यालय,

श्रीगंगानगर (राजस्थान)

Anthology : The Research

होगी। अतः ऐसी युवा पीढ़ी की आवश्यकता होगी जो सांस्कारिक रूप से इतनी दृढ़ हो जो वृद्धों की उचित देखभाल कर सकें एवं उन्हें सम्मानपूर्वक जीने योग्य जीवन प्रदान कर सकें।

वृद्धावस्था का अल्प या दीर्घ होना इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति कितना जीवित रहता है। कुछ लोगों के लिये यह अवस्था जीवन की सबसे लम्बी तथा कुछ के लिये छोटी होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1889 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वृद्धों की स्थिति एवं उनकी समस्याओं पर चर्चा के बाद प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर को "वृद्ध दिवस" के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1982 एवं 1999 "विश्व वृद्ध वर्ष" के रूप में मनाया गया।

भारत में आदिकाल से ही संयुक्त परिवार की प्रथा रही है। इस प्रथा में वृद्ध उपेक्षित, उदासीन व असहाय न होकर परिवार का मुखिया होता था। परिवार के हर अहम् फैसले उसके द्वारा किए जाते थे या उससे अनुमोदित होते थे परिवार के बुजुर्ग अपने अनुभवों व अर्जित बुद्धि के आधार पर बच्चों का मार्गदर्शन करते थे। संयुक्त परिवार में दादा-दादी का पूर्ण सम्मान था। इसका प्रमुख कारण था कि प्राचीन सामाजिक व्यवस्था कृषि प्रधान थी जिसमें जीवन के अंतिम क्षण तक वृद्धों को आर्थिक कार्यों में योगदान का अवसर बना रहता था। इतना ही नहीं परम्परागत समाज में धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान था। धार्मिक क्रियाओं के क्रियान्वयन में वृद्धजनों के अनुभवों की आवश्यकता होती है, फलतः इनकी समाज में उच्च स्थिति थी।

आज भी एशिया के अनेक देशों में यह परम्परा विद्यमान है किन्तु सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थितियों के कारण अब यह परिदृश्य बदल रहा है।

परन्तु वर्तमान में सामाजिक ढांचे यथा-पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक सभी में बदलाव दिखाई देता है। संयुक्त परिवार एकल परिवारों में, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं नवीन व्यवसायों के उद्भव बदल रही सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक क्षेत्र में युवा वर्ग के बदलते मूल्य, परम्पराओं एवं सांस्कृति मूल्यों में हास के कारण वृद्धजनों को पूर्व में प्राप्त सामाजिक सुरक्षा भी अब दम तोड़ रही है। जिसका प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

यह स्पष्ट है कि वृद्धावस्था के स्वरूप को समझने के लिए इसे जैविकीय (शारीरिक, मानसिक) एवं सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक इत्यादि संदर्भ में ही समझना होगा। जीव विज्ञानी, वृद्धावस्था को जीवन की एक सामान्य प्रक्रिया मानते हैं। व्यक्ति का वृद्ध होना तो आयु के हिसाब से एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसे किसी भी कीमत पर रोका नहीं जा सकता। आयु बढ़ने के साथ-साथ वृद्धावस्था का आना एक शाष्वत और अटल सत्य है। इस अवस्था की अपनी अनेक समस्याएँ एवं चुनौतियाँ हैं।

आज इस नवीन आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के युग में जहां युवा ऊर्जा एवं शक्ति के लिए अपार सम्भावनायें मौजूद हैं वहीं उनके कार्य के घंटे एवं तनाव बढ़ता जा रहा है, जिस कारण एकल परिवारों के माता-पिता को पुनः अपने बच्चों के पालन-पोषण एवं उनके व्यक्तित्व विकास हेतु अपने माता-पिता ही उपयुक्त दिखाई देते हैं यदि इस संदर्भ में देखें तो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वृद्धों की बदलती एवं बच्चों के पालन-पोषण में एक महती भूमिका दिखाई देती है।

एक ही छत के नीचे तीन पीढ़ियों का साथ तीनों के लिए लाभदायक होता है। यानि बच्चे, जवान और वृद्ध। ऐसा साथ सम्भव न हो (विशेषकर नाना-नानी के मामले में) तब भी रिश्तों की प्रगाढ़ता और नियमित सम्पर्क से सबसे व्यक्तित्व और जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के जीवन में दादा-दादी की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। एकल, छोटे और सिंगल पैरेंट परिवारों के दौर में उनका महत्व और भी बढ़ गया है। माता-पिता के बाद घर के बुजुर्ग ही वे करीबी व्यक्ति होते हैं, जिन पर बच्चा पूरा भरोसा कर सकता है। उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए इस भरोसे का पनपना अनिवार्य है।

वृद्ध बच्चों की देखभाल के साथ ही साथ वास्तविक अर्थों में बच्चों के दोस्त बन सकते हैं। कहा जाता है कि "बालक और वृद्ध" एक समान होते हैं अंतर केवल उनके अनुभव में होता है जहां बालक अनुभवहीन होता है वहीं वृद्ध अनुभवनों से परिपूर्ण होते हैं। उनसे बच्चा बेहिकक अपनी बाते सांझा कर सकता है या शिकायतें कर सकता है। इसलिए छोटे बच्चे घर के बुजुर्गों के साथ ज्यादा सहज रूप में रहते हैं, क्योंकि वे हमेशा एक-से रहते हैं। माता-पिता की तरह नहीं कि कभी तो खूब

Anthology : The Research

लाड़-प्यार और कभी अनुशासन और कड़ाई दिखाने लगे। वृद्ध बच्चे और उसके पूर्वजों के बीच की कड़ी होते हैं जो उसे उसकी जड़ों से जोड़ते हैं। अपने अनुभव और इच्छा से वे उसके लिए ज्ञान, जानकारी, सहायता और सहयोग का स्रोत होते हैं। घर में वृद्धों की मौजूदगी से ही बच्चे धर्म-संस्कृति और संस्कार से परिचित होते हैं। वृद्धों द्वारा सुनाई गई कथा-कहानियों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों, रीति रिवाजों तथा संस्कृति का हस्तान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता है। इन कहानियों के माध्यम से बच्चे में रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता का विकास होता है।

वर्तमान समय में बच्चों में बढ़ती अनुशासनहीनता, धैर्य की कमी और शीघ्रता से अपने प्रत्येक खिलौने से ऊब जाना, अकेलेपन एवं चिड़चिड़ेपन का शिकार होना आदि हमारे मध्य बुजुर्गों के घटते हुये सम्मान एवं सामंजस्य के कारण उत्पन्न समस्याएँ हैं।

यह युग आर्थिकी का युग है जिसमें माता-पिता दोनों कामकाजी हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि कामकाजी माताएँ बच्चों से जुड़ी सारी जिम्मेदारियाँ निभाती तो हैं, लेकिन कई बार काम के दबाव में वे चिड़चिड़ी और हताश हो जाती हैं। ऐसे में उनका व्यवहार बच्चों पर नकारात्मक असर डालता है घर में वृद्ध हो तो इसकी नौबत नहीं आती।

बच्चे के साथ समय बिताने और उससे जुड़ी जिम्मेदारियाँ निभाने से वृद्धों को खुशी और जीने का नया उद्देश्य मिलता है लेकिन यह तभी सम्भव है जब युवा पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच उचित तालमेल हो। पालन-पोषण के तरीके और सोच को लेकर पीढ़ियों में अंतर संभव है लेकिन इसे कलह न बनाकर बच्चों के भविष्य के लिये जो उचित हो से किया जाना आवश्यक है। कई बार दादा-दादी अत्यधिक लाड़-प्यार से बालक को बिगाड़ देते हैं। लड़का और लड़की में भेदभाव कर पारिवारिक माहौल कष्टमय कर देते हैं ऐसी स्थिति में बालक के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की बजाय उसका विपरीत असर दिखाई देने लगता है।

परन्तु यदि वृद्धजन बच्चों के साथ सकारात्मक सोच के साथ व्यवहार करते हैं, तो

उनका मस्तिष्क ज्यादा सचेत एवं सक्रिय रहता है और इस तरह उन्हें एक नई ऊर्जा और समझ मिलती है। यदि बच्चा थोड़ा बड़ा है तो वह अपने बुजुर्गों से स्वयं सीखते-सीखते उन्हें भी बहुत कुछ सीखा सकता है खासतौर पर नई तकनीक के बारे में।

यद्यपि वृद्धावस्था में शारीरिक शक्ति, स्वास्थ्य, मानसिक एवं शारीरिक योग्यताएं अपेक्षाकृत कम क्रियाशील हो जाती हैं परन्तु रचनात्मकता एवं रुचि ये ऐसी योग्यताएं हैं जो व्यक्ति की बढ़ती उम्र के साथ और परिपक्व होती हैं और इसके अनेक उदाहरण हम अपने समाज में देखते रहते हैं। इसे ईश्वर का वरदान मानते हुए इनका उपयोग कर, अपनी सकारात्मक सोच के साथ वृद्धजन बुढ़ापे में भी सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं तथा उनकी यह सकारात्मकता परिवार के सदस्यों के संबंधों को एक नई ऊर्जा एवं जीवन्तता प्रदान करेंगी जो आज की तनाव और भागदौड़ की जिन्दगी में युवा, माता-पिता के लिये किसी उपहार से कम नहीं होगी।

जाहिर है बुजुर्गों की मौजूदगी एवं उनका स्नेहमय एवं परिपक्व व्यवहार, उनके जीवनभर के अनुभव बच्चे के हित और उसके सर्वांगीण विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अतः जैसे संस्कारों की नींव आज हमारे बुजुर्गों के द्वारा बालकों में स्थापित की जायेगी वैसी ही भावी पीढ़ी हमारे सामने उदय होगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *Publication Manual of the American Psychological Association, 6th edition (American Psychological Association) 2009*
2. "Old age", n. *Oxford English dictionary online, Sep.2013, Oxford University Press 2013*
3. *वृन्दा सिंह- "मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध", पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2014*
4. *डॉ. वन्दना जैन- मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध, अभिषेक प्रकाशन, जयपुर, 2015*
5. *डॉ. राम आहूजा- भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2010*
6. *डॉ. संतोष सांघी - दैनिक भास्कर, 11 मार्च, 2015*